# शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पुस्तकालय का योगदान

पूजा जैन*

*पुस्तकालय प्रत्येक शैक्षिक संस्थान में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भारत में स्कूली शिक्षा के शीर्ष (अपेक्स) संस्थान के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह एक ऐसा संस्थान है, जो भारत में विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए तथा विद्यार्थियों, शिक्षकों (सेवा-पूर्व एवं सेवारत) एवं अन्य हितधारकों के लिए अनुसंधान, प्रशिक्षण, पाठ्यपुस्तकें एवं अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्रियों के विकास तथा विस्तार की सेवाएँ प्रदान करता है। इस लेख में रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के सभी सक्रिय अनुभागों, प्रमुख संसाधनों एवं सेवाओं के बारे में बताया गया है। साथ ही, इस पुस्तकालय की विद्यालयी शिक्षा में भूमिका एवं वर्तमान में पुस्तकालय के बदलते स्वरूप पर भी चर्चा की गई है। इस लेख में यह भी बताया गया है कि किस प्रकार पुस्तकालय आधुनिक युग में ऑनलाइन उपलब्धता बेहतर बनाते हुए डिजिटल पुस्तकालय के माध्यम से अपने संसाधनों एवं सेवाओं को प्रासंगिक करते हुए अपना दायित्व पूरा कर रहा है।*

पुस्तकालय का शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वह स्कूली स्तर पर हो या उच्च शिक्षा स्तर पर। पुस्तकालय का उपयोग शिक्षा को नया रूप देने एवं सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुगम बनाने में किया जाता है। पुस्तकें, मनुष्य की सबसे अच्छी दोस्त होती हैं और मनुष्य को विषम परिस्थितियों में सहायता प्रदान करती हैं। पुस्तकों को पढ़ने एवं समझने से मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है। कुछ लोगों को पुस्तक पढ़ने में आनंद आता है तथा उन्हें पुस्तकों का संग्रह करना भी अच्छा लगता है।

एक शांत कक्ष, अनेक किताबें, कई लोग, फिर भी चुप। ऐसे किताबों से भरे कक्ष को पुस्तकालय या लाइब्रेरी कहते हैं। अपने स्कूल या कॉलेज के दौरान हम सभी कई बार पुस्तकालय गए होंगे। पुस्तकालय का अर्थ पुस्तकों का स्थान है। पुस्तकालय में कई प्रकार की किताबों का संग्रह होता है। यहाँ पर प्रत्येक उम्र के व्यक्ति के लिए उसकी रुचि के अनुसार किताबें उपलब्ध रहती हैं।

सभी व्यक्तियों द्वारा, सभी विषयों की पुस्तकें खरीदना आसान नहीं है। प्रत्येक विद्यार्थी, व्यक्ति एवं आर्थिक रूप से अक्षम लोग महँगी-महँगी पुस्तकें नहीं खरीद सकते। उनके लिए पुस्तकालय, पुस्तके पढ़ने का बहुत ही सुगम एवं आसान माध्यम है। पुस्तकालय में एक बार किताब आ गई, तो वह

**सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष*, पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली 110016

© NCERT not to be republished

कई लोगों द्वारा पढ़ी जाती है। लोग उसे पढ़कर पुस्तकालय को लौटा देते हैं, जो फिर किसी अन्य व्यक्ति के पढ़ने के काम आती है। इसके अलावा, पुस्तकालय में व्यक्ति निःशुल्क या न्यूनतम मासिक शुल्क देकर कई पुस्तकें पढ़ सकता है एवं अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकता है।

पुस्तकालय का वातावरण बहुत शांत होता है। वहाँ पाठकों को बात न करने की सूचना दी जाती है। पुस्तकालय में अलग-अलग जगहों पर कृपया शोर न करें, शांति बनाए रखें जैसे वाक्य लिखे होते हैं। पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने के लिए मेज़-कुर्सियों की सुविधा दी जाती है। यहाँ बैठकर व्यक्ति शांतिपूर्वक एवं एकाग्रचित्त होकर अपना पूरा ध्यान किताब पढ़ने में लगा सकता है। यहाँ पढ़ने के लिए पर्याप्त समय मिलता है, जिससे विद्यार्थी अपनी परीक्षा एवं प्रतियोगिता की तैयारी आराम से कर सकते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग विषयों की किताबें पढ़ने में रुचि होती है। बच्चे, बूढ़े, जवान किसी भी उम्र का व्यक्ति अपनी रुचि के अनुसार पुस्तकों को पढ़कर अपना ज्ञानवर्धन कर सकता है। साथ ही, अलग-अलग विषयों पर पुस्तकें पढ़ने से व्यक्ति में हर क्षेत्र का ज्ञान बढ़ता है, जैसे— कॉमिक्स, किस्से कहानी, उपन्यास, नाटक, वैज्ञानिक शोध, शोध सर्वेक्षण, शब्दकोश, संदर्भ पुस्तकें, नीतिगत दस्तावेज़, पत्र-पत्रिकाएँ आदि पढ़ने से व्यक्ति में ज्ञान का विकास होने के साथ-साथ काल्पनिकता, जागरूकता तथा बौद्धिक सृजनात्मकता का विकास होता है। पढ़ाई से संबंधित किताब पढ़ने से व्यक्ति शिक्षित होकर अपने जीवन में आगे बढ़ता है। पुस्तकालय में कई ऐतिहासिक किताबें भी उपलब्ध रहती हैं, जिसे पढ़कर व्यक्ति देश और दुनिया के रोचक इतिहास एवं ज्ञान को समझ सकता है।

प्रत्येक पुस्तकालय अपने मूल संगठन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में अहम भूमिका निभाता है। उसी प्रकार स्कूली पुस्तकालय के उद्देश्य भी स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों में मददगार साबित होते हैं, जैसे कि विद्यार्थियों और शिक्षकों के उपयोग के लिए अध्ययन सामग्री उपलब्ध करवाना, पढ़ने की रुचि विकसित करना और बढ़ावा देना, विभिन्न प्रकार के स्रोतों के बारे में प्रशिक्षित कर उनके उपयोग को प्रोत्साहित करना, जो भविष्य में स्कूली या उच्च शिक्षा में अनुसंधान एवं अध्ययन में मददगार साबित होता है। स्कूल में पुस्तकालय की सुविधा बच्चों के मन में पुस्तकालय का स्थान बनाने के साथ-साथ पढ़ने की आदत को भी विकसित करती है।

पुस्तकालय को अनिवार्य घटक बताते हुए *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर पुस्तकालय का उपलब्ध होना एवं साथ ही उनके कार्यात्मक (फ़ंक्शनल) होने पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें शिक्षकों एवं बच्चों को पुस्तकालय में उपलब्ध संसाधनों के बारे में जानकारी एवं उसका उपयोग करने के लिए प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है। छुट्टियों में स्कूली पुस्तकालय को खुला रखने का सुझाव भी दिया गया है, जिससे कि बच्चों में पढ़ने की रुचि, एकाग्रता एवं आनंद में वृद्धि हो सके। इसके अंतर्गत स्कूली पुस्तकालय में नई सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करते हुए शिक्षकों एवं बच्चों को दुनिया भर से जोड़ने के बारे में भी उल्लेख किया गया है। इस बात पर भी विशेष ध्यान देने को कहा गया है कि पुस्तकालयों को अन्य रूपों

© NCERT not to be republished

में भी जैसे कि चर्चा के लिए, किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रदर्शन (शिल्पकार), कहानी सुनने व सुनाने के लिए, के उद्देश्य से भी इस्तेमाल किया जा सकता है। साथ में यह भी उल्लेख किया है कि सप्ताह में कक्षा के एक पीरियड की अवधि बच्चों में पढ़ने की आदत और अन्य उद्देश्यों को पूरा करने में शायद ही सक्षम होगी।

भारत सरकार द्वारा समग्र शिक्षा (2018–19 से) के अंतर्गत 'पढ़े भारत बढ़े भारत' की गतिविधियों के पूरक के रूप में तथा सभी उम्र के विद्यार्थियों में पढ़ने की आदत को पोषित करने के लिए विद्यालयों के पुस्तकालयों का सुदृढ़ीकरण किया जा रहा है, जिसके लिए केंद्र प्रायोजित योजना, सरकारी स्कूलों के लिए पुस्तकालय अनुदान के माध्यम से पुस्तकें क्रय करने का प्रावधान है। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2017 में ज्ञात हुआ कि किताबें पढ़ने से बच्चों की उपलब्धि में सुधार होता है। भारत सरकार द्वारा पहली बार प्राथमिक से लेकर उच्चतर माध्यमिक तक के स्कूलों के लिए अलग से वार्षिक पुस्तकालय अनुदान का प्रावधान किया गया है, जो 5,000 से 20,000 तक है। इससे विद्यार्थियों में समझ के साथ पढ़ने की प्रक्रिया सुविधाजनक होगी, जिसमें पुस्तकालय संसाधनों का सहजता से उपयोग किया जाएगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी समुदाय एवं शिक्षण संसाधनों में पढ़ने की आदत विकसित करने के लिए पुस्तकों तक पहुँच और उपलब्धता बेहतर करने की आवश्यकता पर बल दिया है। इस नीति में यह अपेक्षा की गई है कि सभी समुदाय एवं शिक्षण संस्थान, विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय, ऐसी पुस्तकों की समुचित आपूर्ति सुनिश्चित करेंगे जो कि सभी शिक्षार्थियों, जिसमें नि:शक्तजन एवं विशेष आवश्यकता वाले शिक्षार्थी, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वंचित लोगों के साथ-साथ ग्रामीण और दूरदराज़ के क्षेत्रों में रहने वालों की आवश्यकताओं और रुचि को पूरा करते हों। इस हेतु पुस्तकों की ऑनलाइन उपलब्धता बेहतर बनाने एवं डिजिटल पुस्तकालय को अधिक व्यापक बनाने हेतु कदम उठाने की अनुशंसा की गई है। साथ ही विद्यालयों के पुस्तकालयों को समृद्ध करना, वंचित क्षेत्रों में ग्रामीण पुस्तकालयों एवं पठन कक्षों की स्थापना करना, भारतीय भाषाओं में पठन सामग्री उपलब्ध कराना, बाल-पुस्तकालय एवं चल-पुस्तकालय खोलना, पूरे भारत में और विषयों पर सामाजिक पुस्तक क्लबों की स्थापना व शिक्षण संस्थानों और पुस्तकालयों में आपसी सहयोग बढ़ाने पर बल दिया गया है

भारत में स्कूली शिक्षा के शीर्ष (अपेक्स) संस्थान के रूप में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) की महत्वपूर्ण भूमिका है, जो वैश्विक स्तर पर स्कूली शिक्षा में अपने योगदान के लिए विख्यात है। जैसा कि शिक्षा ही विकसित राष्ट्रों के विकास का आधार मानी जाती है, उसी प्रकार पुस्तकालय, शिक्षा के चार स्तंभों में से एक है। इंटरनेशनल फ़ेडरेशन ऑफ़ लाइब्रेरी एसोसिएशन्स एंड इंस्टीट्यूशंस (ईफला) के स्कूल लाइब्रेरी मेनिफ़ेस्टो के अनुसार पुस्तकालय ज़िंदगी भर सीखने के कौशल को विकसित करने के साथ विद्यार्थियों को ज़िम्मेदार नागरिक बनाने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षा मानव को सक्रिय और चलायमान बनाती है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् एक स्वायत्तशासी

© NCERT not to be republished

संगठन है, जोकि शिक्षा पाठ्यक्रम, शिक्षण सहायक सामग्री, पाठ्यक्रमों के दिशा-निर्देश, पाठ्यपुस्तकों के विकास, शिक्षक-प्रशिक्षण एवं शिक्षा के अंतःविषय से संबंधित क्षेत्रों में निरंतर अनुसंधान कर रहा है। पुस्तकालय के संदर्भ विभाग में नवीनतम विश्वकोश, गजट, शब्दकोश और संदर्भ साहित्य का अच्छा संग्रह है।

सभी अकादमिक पुस्तकालयों में स्कूली पुस्तकालय एक ऐसा आधार है, जो किसी भी विषय में नई जानकारी से लेकर उसकी उत्पत्ति, संबंधित साहित्य एवं जीवन में समय-समय पर आने वाली चुनौतियों को भी पढ़ने के माध्यम से सुलझाता है एवं पाठकों को मानवीय सामाजिक एवं पेशेवर स्तर पर सभी परिस्थितियों का सामना करने हेतु तैयार करता है।

## राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का पुस्तकालय

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पुस्तकालय को एन.आई.ई लाइब्रेरी (नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एजुकेशन लाइब्रेरी) भी कहा जाता है, जबकि पुस्तकालय का अधिकृत नाम पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग है। यह पुस्तकालय सन् 1967 में रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न स्वतंत्र विभागीय पुस्तकालयों के एकीकरण करने के फलस्वरूप अस्तित्व में आया। यह पुस्तकालय रा.शै.अ.प्र.प. के प्रांगण के बीचों-बीच स्थित है। रा.शै.अ.प्र.प. के पुस्तकालय के बाहर हिंदी वर्णमाला के स्वर्णाक्षरों से सुसज्जित मानव निर्मित एक ऐसा मनोहारी वृक्ष है, जो प्रत्येक आगंतुक को अपनी ओर आकर्षित करता है। यह पुस्तकालय गोविंद बल्लभ पंत खंड, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली के तीनों तलो; भूतल, प्रथम व द्वितीय मंज़िल पर स्थापित है। यह पुस्तकालय शिक्षा और संबंधित क्षेत्रों में (सामान्य, पाठ्य और संदर्भ) पुस्तकों, शब्दकोशों, पत्रिकाओं और अन्य संबंधित सामग्रियों का एक समृद्ध संग्रह है। यह शिक्षा और इसके अंत:विषयों के क्षेत्र में देश

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय), नयी दिल्ली

© NCERT not to be republished

में सबसे अधिक संसाधनों वाला सूचना केंद्र है, जहाँ पर ज्ञान के स्रोत का विपुल भंडार है।

पुस्तकालय के भूतल पर नई पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, अखबार, अधिग्रहण अनुभाग, परिचालन अनुभाग और संदर्भ अनुभाग एवं कार्यालय कक्ष है। यही नहीं पाठकों की सुविधा के लिए फ़ोटोकॉपी भी भूतल पर उपलब्ध है। प्रथम तल पूर्ण रूप से पुस्तकों को समर्पित है, जहाँ बहुपयोगी बहुविषयक पुस्तकें हिंदी, उर्दू, संस्कृत एवं अंग्रेज़ी में उपलब्ध हैं। इसी के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तक आर-काइव (पुरालेख) भी बनाया गया है, जो अकादमिक सदस्यों एवं शोधार्थियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसी तल पर एक सेमिनार कक्ष भी है। इसके अतिरिक्त द्वितीय तल पर सभी जिल्द (बाउंड) वाले जर्नल्स रखे गए हैं, ताकि शोधार्थी एवं पाठक उन्हें पढ़ सकें।

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग के प्रमुख कार्य

- स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा पर प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक संसाधनों आदि को प्राप्त कर, व्यवस्थित और उपलब्ध करना व प्रसारित करना।
- पारंपरिक संदर्भों, रेफरल सेवाओं और दस्तावेज़ वितरण सेवाओं के माध्यम से शिक्षाविदों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों का सहयोग करना।
- पुस्तकालय मैनुअल का विकास एवं उपयोग करने हेतु राज्यों अथवा संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संगठनों के पुस्तकालय कर्मियों की सेवा में सुविधा प्रदान करना।
- ग्रंथ सूची (बिबलियोग्राफ़ी), पुस्तकों की समीक्षा (बुक-रिव्यू), पत्रिकाओं की वर्तमान सामग्री (करंट कंटेंट), अखबारों की चयनित महत्वपूर्ण खबरें (न्यूज़क्लिप सिरीज़), नई पुस्तकों के आगमन (न्यू अराइवल) के बारे में सूचना देना एवं प्रसार करना।
- डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क, डेलनेट (DELNET) के माध्यम से संसाधन साझा कर पाठकों को सुविधा प्रदान करना।
- पाठकों को इंटरनेट की सुविधा प्रदान करना।

## रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय की विद्यालयी शिक्षा में भूमिका

यह पुस्तकालय शिक्षा एवं उससे संबंधित विषयों पर संसाधनों का ऐसा भंडार है, जो कि विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहा है, जैसे–

- **विश्व स्तर पर**— पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग विश्व के सभी पाठकों के लिए, जिन्हें पुस्तकालय में उपलब्ध सामग्री का उपयोग करने की आवश्यकता है, के लिए बिना किसी राशि के आवश्यक दस्तावेज़ उपलब्ध करने तथा सभी अध्ययन सामग्री को पढ़ने एवं फ़ोटोकॉपी की सुविधा प्रदान करता है। यहाँ देशभर एवं विश्व के अन्य देशों, जैसे— कनाडा, यू.एस.ए., जापान आदि से अंतरराष्ट्रीय पाठक आते हैं जिससे पुस्तकालय के योगदान को विशेष महत्व मिलता है। इसके साथ पुस्तकालय की पूर्ण रूप से विकसित इंटरेक्टिव वेबसाइट एवं कंप्यूटरीकृत पुस्तकालय सेवाएँ बहुत ही सराहनीय हैं। वेब ओपेक और डेलनेट की सदस्यता लेने से सभी पाठकों को पुस्तकालय के 6,500 से अधिक संसाधन उपलब्ध हो

© NCERT not to be republished

जाते हैं। पुस्तकालय की वेबसाइट पर यूज़फूल लिंक्स एवं ईमेल द्वारा पाठकों की आवश्यकता के अनुसार उनके आग्रह पर सूचना भी प्रदान की जाती है।

- **राष्ट्रीय स्तर पर**—किसी भी पुस्तकालय का उद्देश्य उसके मूल संस्थान के उद्देश्य को पूरा करना होता है। रा.शै.अ.प्र.प. का पाठ्यपुस्तकों को विकसित करने के अलावा प्राथमिक उद्देश्य सभी राज्यों की विशिष्ट ज़रूरतों के अनुसार पाठ्य एवं प्रशिक्षण सामग्री विकसित करना व उनका प्रशिक्षण देना है। परिषद् के इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अभी तक कई मैनुअल्स तैयार किए गए हैं एवं उनका प्रसार भी किया जा रहा है, जैसे— प्राथमिक शिक्षा के शिक्षकों के लिए कक्षा पुस्तकालय के प्रबंध एवं गतिविधि से संबंधित मैनुअल, स्कूली पुस्तकालय के कंप्यूटरीकृत एवं आधुनिकीकरण से संबंधित मैनुअल। परिषद् के पुस्तकालय एवं उसके क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के पुस्तकालयों द्वारा विभिन्न राज्यों के एस.सी.ई.आर.टी. अथवा एस.आई.ई. एवं डायट (डी.आई.ई.टी.) के पुस्तकालयाध्यक्षों एवं पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए निरंतर ओरिएंटेशन एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, इस कार्यक्रम में पुस्तकालय से जुड़े कौशल अद्यतन करते हुए नई तकनीकी एवं प्रशासनिक जानकारी साझा की जाती है। इस तरह के कार्यक्रम पुस्तकालय पेशेवरों के लिए बहुत ही मददगार होते हैं। पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग एवं आर.आई.ई. द्वारा राष्ट्रीय सेमिनार एवं सम्मेलन भी आयोजित किए जाते हैं।

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग के कार्य के अनुसार अनुभाग

इस अनुभाग में पुस्तकालय प्रबंधन के ज़्यादातर आंतरिक कार्य होते हैं, जो पाठक को आभास ही नहीं होता है कि एक पुस्तक के चयन से लेकर पुस्तक की पाठक तक पहुँच बनाना एक लंबी प्रक्रिया का परिणाम होता है। पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग को प्रमुख कार्य के आधार पर पाँच अनुभागों में वर्गीकृत किया गया है, जो इस प्रकार हैं—

1. **अधिग्रहण अनुभाग (एक्वीज़िशन सेक्शन)**— पुस्तकालय का अधिग्रहण अनुभाग पुस्तकों, संदर्भ पुस्तकों और बहु-खंड पुस्तकों की खरीद के लिए एक प्रक्रिया को अपनाता है, जिसके अंतर्गत परिषद् के अकादमिक अथवा नॉन-अकादमिक सदस्यों द्वारा अनुशंसित पुस्तकों की सूची जो कि विभागाध्यक्ष के द्वारा पुस्तकालयाध्यक्ष को भेजी जाती है, अनुभाग में कार्यरत कर्मियों द्वारा चेक की जाती है। इसके पश्चात् यदि पुस्तक लाइब्रेरी में उपलब्ध न हो तो आदेश पत्र (आर्डर प्लेस) जारी किया जाता है। जैसे ही पुस्तक बिल के साथ प्राप्त की जाती है, पुस्तक को सभी तरीकों से जाँचकर (शीर्षक, लेखक, प्रकाशन, प्रकाशन वर्ष, संस्करण इत्यादि) एक्सेशन रजिस्टर में चढ़ाया जाता है और एक नंबर दिया जाता है जो कि एक यूनिक नंबर होता है, जिसे एक्सेशन नंबर कहते हैं। यह एक्सेशन रजिस्टर प्रत्येक पुस्तक का बेसिक रिकॉर्ड होता है, जिसमें पुस्तक से संबंधित पूर्ण जानकारी होती है, जो भविष्य में भी काम आती है। इसके बाद पुस्तकों में स्टैंपिंग एवं अन्य प्रक्रिया को पूर्ण करते हुए पुस्तकों को तकनीकी प्रक्रमण

© NCERT not to be republished

अनुभाग (टेक्निकल सेक्शन) में भेज दिया जाता है। प्रत्येक वर्ष एन.आई.ई. के सभी विभागों को उनकी आवश्यकता एवं पिछले वर्ष में पुस्तकों पर व्यय राशि के अनुसार बजट आवंटित किया जाता है। आज के आई.सी.टी. युग में भी इस अनुभाग की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता है।

2. **तकनीकी प्रक्रमण अनुभाग (टेक्निकल सेक्शन)**— क्या आपने कभी सोचा है कि पुस्तकालय में उपलब्ध हज़ारों पुस्तकों में से पुस्तकालय कर्मचारी कैसे मिनटों में आपकी आवश्यकता के अनुसार पुस्तक निकाल कर देता है। यह तकनीकी प्रक्रमण के कार्य से संभव हो पाता है। तकनीकी सेवाएँ, दृश्य के पीछे की गतिविधियाँ हैं, जो पाठकों को प्रभावी पुस्तकालय सेवाएँ प्रदान करने के लिए सक्षम बनाती हैं। इन सेवाओं में वर्गीकरण (क्लासिफ़िकेशन), कैटलॉगिंग, सब्जेक्ट हेडिंग, डेटा एंट्री, चेकिंग और फ़िज़िकल प्रोसेसिंग (बुककार्ड, बुकपॉकेट, पुस्तक लौटाने की तारीख पर्ची, बारकोड लेबल का निर्माण और चिपकाना) जैसी प्रक्रियाएँ सम्मिलित हैं। अंत में पुस्तकों को उचित सत्यापन के बाद संबंधित अलमारी में रख दिया जाता है। पुस्तकालय में वर्गीकरण के लिए डी.डी.सी. (डीवे डेसीमल क्लासिफ़िकेशन) वर्गीकरण योजना, कैटलॉगिंग के लिए लाइब्रेरी सॉफ़्टवेयर में कंप्यूटरीकृत एंट्री की जाती है, जो ओपेक के रूप में सभी उपयोगकर्ताओं के द्वारा उपयोग किया जाता है।

3. **परिचालन अनुभाग (सर्कुलेशन सेक्शन)** — यह अनुभाग पुस्तकालय के उपयोगकर्ताओं (यूज़र) को पुस्तकों को जारी करने एवं वापसी करने की सेवाएँ प्रदान करता है। इस अनुभाग के सभी कार्य कंप्यूटरीकृत हैं और पुस्तकों का लेन-देन बारकोड तकनीकी पर आधारित है। सभी पंजीकृत पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं को बार-कोडेड पुस्तकालय सदस्यता कार्ड प्रदान किए जाते हैं, जो कंप्यूटरीकृत व्यवस्था में पुस्तकों को आरक्षित (रिज़र्व) करने की सुविधा भी प्रदान करता है।

4. **पत्र-पत्रिका अनुभाग (जर्नल्स सेक्शन)** — यह अनुभाग शोधार्थियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण अनुभाग है। इस अनुभाग में कार्यरत कर्मचारी अग्रिम पत्रिकाओं की प्राप्ति, नवीनीकरण, आदेश, भुगतान, बजट खातों को तैयार करना, पत्रिकाओं की देरी से आपूर्ति पर स्मरण-पत्र एवं प्रत्येक तीसरे वर्ष सभी पत्रिकाओं का अकादमिक सदस्यों द्वारा समीक्षा का कार्य देखते हैं। वर्तमान में पुस्तकालय में 110 विदेशी पत्रिकाएँ अथवा जर्नल्स, दो ऑनलाइन डेटाबेस (जे स्टोर, डेलनेट), 44 ऑनलाइन जर्नल्स (जो कि प्रकाशित पत्रिकाओं के साथ ऑनलाइन फ्री में उपलब्ध हैं), 63 भारतीय पत्रिकाएँ, 18 समाचार-पत्र और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित सभी पत्रिकाएँ भी शामिल हैं।

5. **अनुरक्षण अनुभाग**— यह एक ऐसा क्रियाशील अनुभाग है, जो पुस्तकों की जिल्दसाजी से लेकर, उनके रख-रखाव की पूर्ण ज़िम्मेदारी लेता है, जैसे कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव इत्यादि, जिससे पुस्तकों की सुरक्षा की जा सके। स्टॉक सत्यापन अथवा वेरिफ़िकेशन एंड वीडिंग-आउट भी इसी अनुभाग की प्रक्रिया का हिस्सा है।

© NCERT not to be republished

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तकालय) का संकलन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पुस्तकालय की महत्ता इसमें संकलित विविध अध्ययन सामग्री से ही आँकी जा सकती है, क्योंकि यह शिक्षा और इसके अंतःविषयों के क्षेत्र में देश में सबसे अधिक संसाधन वाले सूचना केंद्रों में से एक है। पुस्तकालय के संदर्भ विभाग में नवीनतम विश्वकोश, शब्दकोश, गजट और संदर्भ साहित्य का अच्छा संग्रह है। पुस्तकालय में बच्चों के लिए बाल साहित्य एवं पत्रिकाएँ, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, शिक्षण तकनीक, मनोविज्ञान, पर्यावरण शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले समूहों की शिक्षा (इंक्लूसिव एजुकेशन), इतिहास शिक्षा, भाषा शिक्षा, नैतिक मूल्य शिक्षा, किशोरावस्था शिक्षा, विज्ञान शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, गणित शिक्षा आदि विषयों के लिए पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह है। इसके अतिरिक्त स्कूली पाठ्यक्रम से संबंधित पाठ्य और पूरक पठन सामग्री के साथ-साथ विभिन्न आयोगों की रिपोर्ट, शैक्षिक सर्वेक्षण एवं शोध सर्वेक्षण और नीति दस्तावेज़ भी पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में हिंदी, उर्दू, संस्कृत, अंग्रेज़ी चार भाषाओं में पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं, जिसमें करीब 1,75,000 से अधिक पुस्तकें, पाठ्यपुस्तकें, संदर्भ पुस्तकें, सामान्य पुस्तकें, मैनुअल्स सर्वेक्षण रिपोर्ट्स इत्यादि शामिल हैं।

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग की सेवाएँ

1. **ओपेक अर्थात् ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग**—यह सार्वजनिक पहुँच के लिए लाइब्रेरी होल्डिंग्स की एक ऑनलाइन सूची है, जो कंप्यूटर एवं लाइब्रेरी सॉफ़्टवेयर की मदद से बड़े पैमाने पर पुस्तकों को खोजने (सर्च) की सुविधा प्रदान करती है। यह बूलियन ऑपरेटर (और या नहीं) का उपयोग करते हुए शब्द आधारित पुस्तकों को खोजने (सर्च) की सुविधा प्रदान करती है। यह सर्च शीर्षक, लेखक, वर्गीकृण, शीर्षक में शब्द, संयोजक के द्वारा भी किया जा सकता है। ओपेक उपयोगकर्ता को लाइब्रेरी होल्डिंग्स में अपनी पसंद के दस्तावेज़ खोजने की सुविधा देता है। इससे पत्रिकाओं की जानकारी, वर्तमान में प्राप्त नई पुस्तकों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होती है। यह सुविधा हमेशा (24×7) वेबसाइट पर उपलब्ध है, अर्थात् पाठक वेब ओपेक की मदद से कहीं से भी पुस्तक की उपलब्धता के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
2. **परिचालन अथवा सर्कुलेशन सेवाएँ**—यह सेवा उपयोगकर्ता अथवा पाठक को सबसे ज़्यादा दिखाई देने एवं उपयोग की जाने वाली सेवा है। इस सुविधा में अकादमिक एवं प्रशासनिक सदस्यों को पुस्तकों को जारी करने की संख्या पुस्तकालय नियम पुस्तिका के अनुसार दी जाती है, जो कि दिए गए इस लिंक द्वारा पढ़ी एवं समझी जा सकती है। रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय चार अन्य प्रकार की सदस्यता सुविधा प्रदान करता है, जो निम्नलिखित हैं—

- आकस्मिक सदस्यता (यह सदस्यता उन सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए निःशुल्क उपलब्ध है, जो पुस्तकालय में किसी उद्देश्य से सिर्फ़ संदर्भ पुस्तकों एवं फ़ोटोकॉपी की सुविधा से लाभान्वित होने आते हैं।)

© NCERT not to be republished

- विशेष सदस्यता (यह सदस्यता सेवानिवृत्त स्टॉफ़ के लिए है, जिसमें दो पुस्तकें जारी व वापसी करने की सुविधा प्रदान की जाती है।)
- बाहरी सदस्यता (यह सदस्यता बाहर के पाठकों के लिए ₹2000 की सुरक्षा राशि जमा करने पर उपलब्ध है, जिसमें दो पुस्तकें जारी व वापसी करने की सुविधा प्रदान की जाती है।)
- संस्थागत सदस्यता (यह सदस्यता शैक्षिक संस्थाओं के लिए ₹5000 की सुरक्षा राशि जमा करने पर उपलब्ध है, जिसमें तीन पुस्तकें जारी व वापसी करने की सुविधा प्रदान की जाती है।)

3. **फ़ोटोकॉपी सेवाएँ**—यह सुविधा पाठकों को किसी संदर्भ पुस्तक में से कुछ पृष्ठों की या पुस्तकों में से किसी पाठ की फ़ोटोकॉपी करने हेतु प्रदान की जाती है। यह सेवा जो पाठक दिल्ली के बाहर से या जो शिक्षक समय निकालकर पुस्तकालय आते हैं, उनके लिए विशेष महत्व रखती है।
4. **पठन सेवाएँ**—पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग के भूतल, प्रथम एवं द्वितीय तल पर बैठने की व्यवस्था उपलब्ध है।
5. **संदर्भ सेवाएँ**—इस सेवा के अंतर्गत एक कर्मचारी पूर्ण रूप से पाठक की व्यक्तिगत सहायता के लिए कार्य करता है, वहीं पुस्तकालय का प्रत्येक कर्मचारी पाठक की मदद के लिए सदैव तत्पर रहता है।
6. **संसाधन सहभागिता**—यह डेलनेट (डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क) की संस्थागत सदस्यता के माध्यम से 6500 से अधिक पुस्तकालयों के कलेक्शन का उपयोग करने की सुविधा प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, अगर कोई पुस्तक रा.शै.अ.प्र.प., पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है और डेलनेट डेटाबेस में दिल्ली के किसी अन्य पुस्तकालय में उपलब्ध है, तो सदस्य के आवेदन करने पर अपेक्षित पुस्तक दो से तीन दिन में उपलब्ध कराई जाती है।
7. **इंटरनेट अथवा वाई-फ़ाई सेवाएँ**—पुस्तकालय में इंटरनेट का उपयोग करने की सुविधा उपलब्ध है, जिसके माध्यम से पाठक पुस्तकालय में उपलब्ध ऑनलाइन सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं।
8. **पुस्तकालय उन्मुखीकरण**—यह गतिविधि विद्यार्थियों एवं अन्य शैक्षिक समूहों को उनके रा.शै.अ.प्र.प. में शैक्षिक भ्रमण के दौरान की जाती है। उन्हें पुस्तकालय के सभी अनुभागों, संसाधन एवं सेवाओं के बारे में बताया और दिखाया जाता है।

इस पुस्तकालय की एक विशेषता यह है कि राजपत्रित अवकाशों के अलावा यह पूरे वर्ष खुला रहता है एवं अपने नाम में जुड़े प्रलेखन शब्द को सार्थक करते हुए ऐसे सूचना उत्पाद हर महीने तैयार करता है, जो पुस्तकालय के पाठक वर्ग को लाभान्वित करते हुए उनके ज्ञान कोश में वृद्धि करते हैं। यह सभी उत्पाद जैसे कि ग्रंथ सूची (बिब्लियोग्राफ़ी), किताबों की समीक्षा (बुक रिव्यू), पत्रिकाओं की वर्तमान सामग्री (करंट कन्टेंट), अखबारों की चयनित महत्वपूर्ण खबरें (न्यूज़क्लिप सिरीज़), नई पुस्तकों के आगमन (न्यू अराईवल) इत्यादि। इसके अतिरिक्त

© NCERT not to be republished

यह सभी सामग्री पुस्तकालय की वेबसाइट पर भी उपलब्ध कराई जाती है।

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग का आधुनिकीकरण

वर्तमान में पुस्तकालय के संसाधनों एवं सेवाओं का प्रारूप बदल गया है, लेकिन पुस्तकालय एवं पाठक दोनों का उद्देश्य वही है। सूचना संसाधनों को पाठक अथवा यूज़र के पास पहुँचाना है। पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग एक आधुनिक पुस्तकालय है। इस पुस्तकालय का प्रत्येक अनुभाग पूर्ण रूप से कंप्यूटरीकृत हो चुका है एवं पुस्तकालय की इंटरेक्टिव वेबसाइट भी है, जो निरंतर अद्यतित की जाती है। आज के आई.सी.टी. युग में वेबसाइट एक संस्थान की छवि होती है। अतः पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग की पूर्ण रूप से विकसित वेबसाइट है, जो उपयोगकर्ताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पुस्तकालय की वेबसाइट को इंटरेक्टिव कहने से तात्पर्य यह है कि यूज़र की आसानी के लिए सभी महत्वपूर्ण आइकॉन होमपेज पर उपलब्ध हैं, जैसे— वेब ओपेक, डेलनेट, सभी सदस्यताओं हेतु फ़ॉर्म डाउनलोड एवं प्रिंट की सुविधा, पुस्तकों को रिज़र्व करने की सुविधा, सभी प्रलेखन उत्पादों का फुलटेक्स्ट वेबसाइट पर उपलब्ध होना, रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों की सभी भाषाओं में सूची उपलब्ध होना इत्यादि। उपरोक्त सेवाओं के अलावा जे स्टोर डेटाबेस की सुविधा भी पाठकों के लिए उपलब्ध है, जो हज़ारों जर्नल्स, पुस्तकों एवं अन्य संसाधनों को उपलब्ध कराता है।

वेबसाइट विज़िटर की संख्या से अनुमान लगाया जा सकता है कि पुस्तकालय की वेबसाइट को कितना ज़्यादा देखा या उपयोग किया जाता है। आज के इंटरनेट युग में वेबसाइट विज़िटर को भी पुस्तकालय यूज़र कहा जा सकता है। इसके साथ-साथ पुस्तकालय में पासवर्ड के आधार पर सभी पाठकों को वाई-फ़ाई इंटरनेट की सुविधा प्रदान की जाती है।

## पुस्तकालय का बदलता स्वरूप

पुस्तकालय का उद्देश्य पाठकों को सही सूचना, सही समय पर उपलब्ध कराना है, परंतु अब पुस्तकालय का स्वरूप-प्रारूप बदल गया है। पहले भौतिक रूप से पुस्तकालय जाकर संसाधन एवं सेवाओं की उपलब्धता होती थी, जो अब इंटरनेट एवं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट की मदद से हर समय (24×7) प्राप्त की जा सकती है। सबसे बड़ा बदलाव संसाधनों के प्रारूप में हुआ है, अब ज़्यादातर संसाधन इलेक्ट्रॉनिक फ़ॉर्मेट में उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

## पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग की भावी योजना

पुस्तकालय में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित पुरातन सामग्री को डिजिटलाइज़ करने का प्रोजेक्ट चल रहा है, जिसमें राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 1975, 1988, 2000 एवं 2005 के आधार पर प्रकाशित पुस्तकों की विषय-वस्तु उपलब्ध कराई जाएगी। देश के सभी विद्यालयी पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए क्षमता विकास कार्यक्रम तैयार किया जा रहा है, जिसे तकनीक का उपयोग कर राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किया जाएगा।

## निष्कर्ष

अत: यह कह सकते हैं कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पुस्तकालय का राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं (1975, 1988, 2000

एवं 2005) के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही विद्यालय स्तर की सभी कक्षाओं (पूर्व-प्राथमिक से बारहवीं तक) के लिए सभी विषयों हेतु पाठ्यपुस्तकों का लिखना, उनका नया संस्करण तथा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षण सामग्री (मैनुअल्स) बनाना आदि जैसे लेखन तथा प्रसार में योगदान देना है। पुस्तकालय समय-समय पर मंत्रालय के अनुदेशों के पालन हेतु विभिन्न कार्यों को प्रभावी रूप से पूरा करने में हमेशा से ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहा है, जिस प्रकार शिक्षक, विद्यार्थियों की प्रतिभा को जान-पहचान कर तथा उनमें पूर्ण विश्वास जाग्रत कर उस प्रतिभा को सबके सामने दर्शनीय बनाता है, उसी प्रकार पुस्तकालय पढ़ने-लिखने की प्रक्रिया में पतवार की तरह मदद कर विद्यार्थियों के जीवन को उपलब्धि पूर्ण बनाकर गौरवान्वित जीवनयापन करने के लिए तैयार करता है।

इस पुस्तकालय की 50 वर्ष से अधिक की यात्रा सराहनीय एवं पूरे विश्व में 'शिक्षा' विषय में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए है। इस पुस्तकालय की भव्यता इसके प्राचीन एवं विशाल संसाधनों का संकलन एवं समय के साथ आधुनिक सॉफ़्टवेयर्स की मदद से नवीनीकरण की प्रक्रिया है। भविष्य में यह पुस्तकालय अपने संसाधनों के लिए एक लेखागार के रूप में होगा, क्योंकि यहाँ पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के द्वारा विकसित सामग्री को संरक्षित किया जा रहा है, जो भविष्य में पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक उपलब्धि होगी।

## संदर्भ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. *वार्षिक रिपोर्ट*. 19 दिसंबर, 2020 को https://ncert.nic.in/annual-report.php. से प्राप्त किया गया.

———. 2006. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली. 25 दिसंबर, 2021 को https://itpd:ncert-gov.in/course/view.php?id=931&section=8. से प्राप्त किया गया.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार, नयी दिल्ली.

© NCERT not to be republished